जल : मानवता की अतृप्त प्यास

(Water : Unquenchable thirst of Mankind)

संपादक

संतन कुमार राम

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस

दिल्ली-110093

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस
डी-18, गली नं. 9, जगतपुरी विस्तार,
शाहदरा, दिल्ली-110093
मो.: 9839977133, 9910143493

© संतन कुमार राम

मूल्य : 850.00

ISBN : 978-93-87932-44-9

प्रथम संस्करण : 2020

अक्षरान्वयन : रमेश कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : आशीष प्रिंटर्स, दिल्ली-110093.

जल संकट : एक साहित्यिक विश्लेषण

डॉ. संगीता मौर्य

असि. प्रोफेसर, हिंदी राजकीय महिला स्ना. महाविद्यालय, गाजीपुर

बचपन में हम सबने एक कविता जरूर पढ़ी होगी 'प्यासा कौवा' जिसमें यही बताया गया है कि घड़े में पानी बहुत कम रहता है और प्यासा कौवा उसमें एक-एक कंकड़ डालता जाता है और पानी ऊपर तक आ जाता है, जिसको पीकर कौवा अपनी प्यास बुझाता है। निश्चय ही यह कविता कौवे की सूझ-बुझ के लिए जानी जाती है। लेकिन मुझे लगता है कि यह कविता पानी की कमी की भी कहानी कहती है। आज जब लोग कितने मील दूर चलकर या कंदराओं से पानी निकालकर पीने को मजबूर हैं तब यह कविता और अधिक प्रासंगिक हो उठती है।

साहित्यकार भविष्यद्रष्टा भी होता है। इसके प्रमाण स्वरूप रहीमदास की पंक्ति 'रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून' के माध्यम से रहीम ने पानी के संरक्षण की बात बहुत पहले ही रखकर भविष्य में पानी की कमी के प्रति लोगों को चेताया था। उनका विश्वास था कि पानी से ही जीवन और प्रकृति अपने सौन्दर्य को प्राप्त कर सकते हैं। यह शाश्वत सत्य है कि पानी के बगैर जीवन अकल्पनीय है। इस दोहे में वर्णित 'सून' शब्द भी पानी के बिना जीवन की निरर्थकता की ओर संकेत करता है।

संत कबीर की साखी में तो पानी से संबंधी कितनी सारी साखियाँ मौजूद हैं जैसे—'जल में कुम्भ कुम्भ में जल, बाहर भीतर पानी' चाहे उनका कहना कि 'संस्कृत है कूप जल, भाषा बहता नीर' या 'पानी केरा बुदबुदा' या फिर 'कया कमंडल भरि लिया, उज्ज्वल निर्मल नीर' यहाँ हम देख सकते हैं कि पानी के कितने सारे रूप हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि 'पानी' मनुष्य के जीवन को ही नहीं सींचता बल्कि कवि ने उसके महत्त्व को इतना

पानी तो निकाल लेते हैं लेकिन हमें यह याद रखना पड़ेगा हम जल बना नहीं सकते। इसीलिए तो कहती हूँ इसे बचा तो लो।

सन्दर्भ सूची

1. अपनी केवल धार, अरुण कमल
2. कबीर ग्रंथावली सटीक, श्यामसुंदर दास
3. कामायनी, जयशंकर प्रसाद
4. गंगा तट, ज्ञानेन्द्रपति
5. प्रतिनिधि कविताएँ, अज्ञेय
6. रहीम ग्रंथावली, विद्यानिवास मिश्र, गोविन्द रजनीश
7. रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास
8. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल